वाइल्ड इन द बैकयार्ड

निमेश वेद

आरेफ़ा तहसीन द्वारा लिखित, यह पुस्तक हमें, हमारे घर के पिछवाड़े विचरण करने वाली विभिन्न प्रजातियों से आबाद दुनिया में ले जाती है। इन प्रजातियों को हम अकसर देखते हैं, लेकिन उनके बारे में बहुत कम जानते हैं। प्रत्येक प्रजाति को उसकी आदतों, रेखाचित्रों, क़िस्सों और सवालों के गहन अध्ययन के माध्यम से जीवन्त किया गया है।

शुरुआत

भरपूर लिखने वाली लेखिका, आरेफ़ा तहसीन ने, रज़ा एच. तहसीन के साथ *'दी लैंड ऑफ़ दी सेटिंग सन एंड अदर नेचर टेल्स'* सहित बच्चों के लिए कई किताबें लिखी हैं। पत्र-पत्रिकाओं के लिए स्तम्भ और लेख भी लिखती हैं। वे, वाइल्ड इन द बैक़यार्ड, की शुरुआत एक समर्पण के साथ करती हैं, जो किताबों की दुकानों और जंगलों को एक दिलचस्प तरीक़े से साथ लाता है : ''मेरे पिता को समर्पित, जो मुझे किताबों की दुकान और जंगल में ले गए, दोनों स्थान पर मेरा हाथ थामा, साथ ही मुझे अकेला भी छोड़ दिया।'' शायद ही कोई और पंक्तियाँ इस पुस्तक की भावना को बेहतर पकड़ पातीं।

भूमिका की पहली पंक्ति प्रासंगिक भी है और लुभाने वाली भी : ''हम शायद सोचते हैं कि सूनापन और वन्यजीव जंगलों तक ही सीमित है। लेकिन हमारे अपने घर के पिछवाड़े में भी बहुत सारे जंगली जीव रहते हैं।'' हममें से अधिकांश लोग वन्यजीवों को बड़े अछूते जंगलों से जोड़कर देखते हैं, जो हमारे निवास से बहुत दूर हैं। हालाँकि कई अध्ययनों से पता चला है कि जंगल शायद ही कभी मनुष्यों से रहित अछूते स्थान रहे हैं लेकिन यह धारणा काफ़ी हद तक अपरिवर्तित ही रही है। इससे लोगों को विश्वास हो गया है कि वन्यजीवों को केवल वनों में ही रहना चाहिए; और जंगलों के बाहर देखी जाने वाली किसी भी 'जंगली' प्रजाति को जंगलों में वापस भेज

एक झलक में :

लेखक	:	आरेफ़ा तहसीन
प्रकाशक	:	पफिन बुक्स - पेंगुइन ग्रुप द्वारा प्रकाशित
वर्ष	:	2015
पेज	:	229
अध्याय	:	25

दिया जाना चाहिए या मार देना चाहिए। इस धारणा के चलते हमने उन कई प्रजातियों को अनदेखा किया है जो गाँवों और शहरों में हमारे घर साझा करती हैं। आरेफ़ा की पुस्तक इन दोनों धारणाओं को चुनौती देती है।

ख़ूबियाँ

पुस्तक की सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि लेखक प्राकृतिक इतिहास के अपने अनुभवों को बातचीत के रूप में और बड़ी स्पष्टता से साझा करती हैं। उदाहरण के लिए, 'दी डेविल्स ओन' नामक पहला अध्याय युवा पाठकों को चमगादड़ों के जीवन का परिचय स्पष्ट लेकिन सूचनाप्रद विवरणों से करवाता है। काश, इन दिलचस्प स्तनधारियों के बारे में अन्य शैक्षिक सामग्री भी मात्र नीरस आँकड़ों और नामों की भरमार की बजाय इसी शैली में बनाई जा सके। कई मामलों में, लेखिका प्राकृतिक इतिहास की झलकियाँ भी साझा करती हैं जो उनके अधिकांश पाठकों को अवश्य अचम्भित करेंगी। उदाहरण के लिए, 'सेंटीपीड्स : दी हंड्रेड लेगर' अध्याय में कहा गया है कि : *"सेंटीपीड (कनखजूरा) में टाँगों की संख्या 30 से लेकर 300 से अधिक हो सकती हैं, लेकिन 100 कभी नहीं। उसके टाँगों के जोड़ों की संख्या हमेशा विषम होती है... प्रत्येक जोड़ी की टाँगें उससे अगली टाँगों की तुलना में लम्बी होती हैं।"* एक अन्य मामले में, लेखिका ने कुछ रत्न पेश किए हैं। जैसे *"कुछ अति चतुर कैपुचिन बन्दर और लीमर गिंजाई (सहस्त्रपाद) को छेड़ते हैं और फिर गिंजाई द्वारा छोड़े जाने वाले तरल को अपनी चमड़ी पर रगड़ लेते हैं, जिससे मच्छर दूर भागते हैं!"* यहाँ इस अवलोकन की मानव केन्द्रित मूल्य आधारित व्याख्या का कोई प्रयास नहीं किया गया। उनके लेखन से पाठक अकसर दिलचस्प सवालों पर विचार करने को प्रेरित होते हैं, जैसे : बारिश किसी जीव द्वारा इकोलोकेशन (प्रतिध्वनिस्थान-निर्धारण) का उपयोग करने की क्षमता को कैसे प्रभावित करती है?

अन्य अध्यायों में, वे पाठकों को जानवरों के व्यवहार पर कुछ और दिलचस्प खोजों से परिचित करती हैं। उदाहरण के लिए 'क्रो : क्राफ्टी क्रो' अध्याय में, लेखिका बताती हैं कि : *"कैसे ऑकलैंड के कुछ वैज्ञानिकों ने अपनी प्रयोगशाला में प्यासे कौवे की कहानी को आज़माने का फैसला किया। याद है न, कौवे की वह कहानी जिसमें कौआ एक घड़े में कंकड़ डालता है ताकि पानी का स्तर बढ़ जाए? इस प्रयोग के परिणाम बताते हैं कि कौवे कुछ कार्यों में, सात-वर्षीय मानव शिशु की तरह चतुर होते हैं!"* इसके साथ वे यह भी जोड़ती हैं कि कैसे कौवे *"ट्रैफ़िक सिग्नल पर काष्ठ फलों (नट्स) को गिराते हैं ताकि गुज़रती कारें नट्स को तोड़ दें।"* कौवों की बुद्धिमत्ता दर्शाते हुए, वे कहती हैं कि *"उसका चिड़िया-दिमाग (birdbrain)* है" जैसे मुहावरों में ज़्यादा दम नहीं है। 'स्क्विरल्स : दी शैडो-टेल्ड' अध्याय में

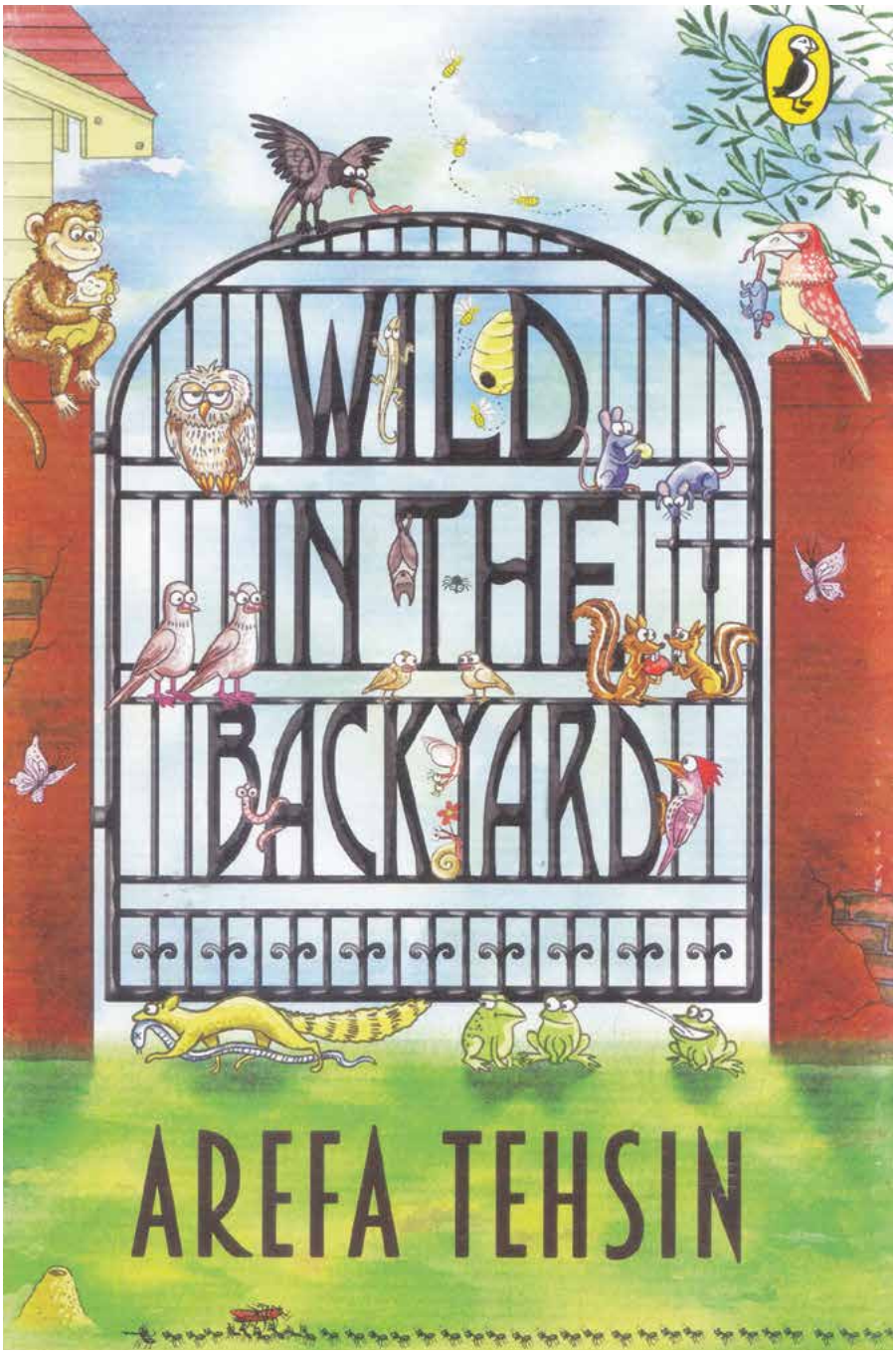

पुस्तक का मुख्य कवर

Credits: Photographed by Nimesh Ved. License: CC-BY-NC.

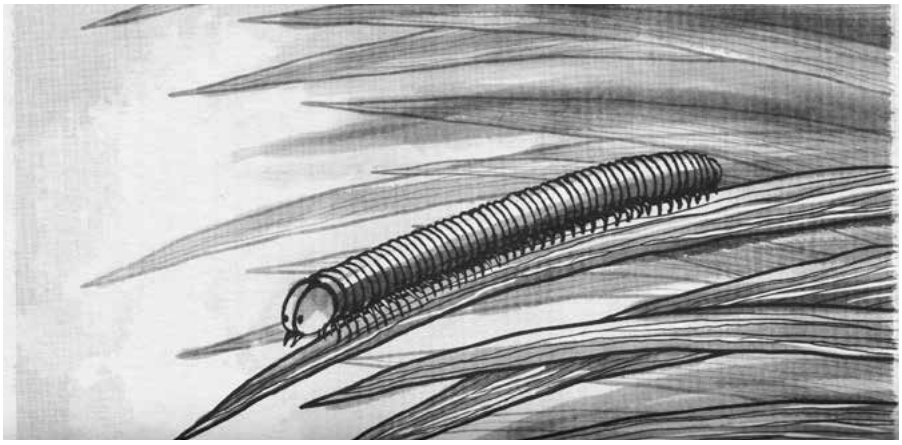

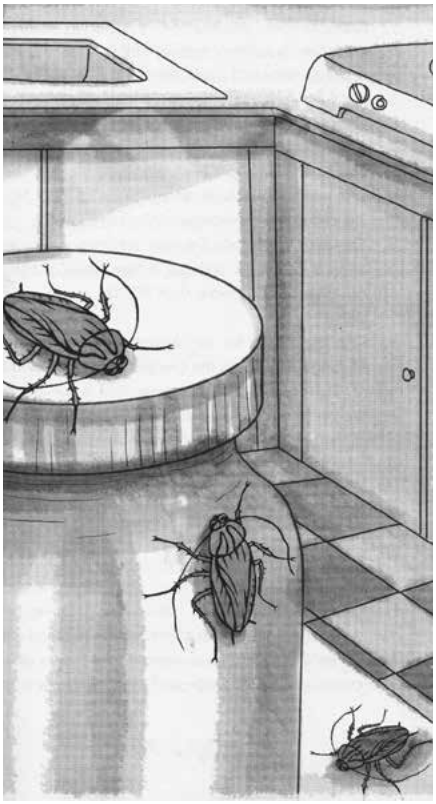

पुस्तक से कुछ चित्र

Credits: Photographed by Nimesh Ved.
License: CC-BY-NC.

लेखिका बताती हैं कि कैसे अन्धविश्वासों का तर्कसंगत आधार नहीं होता है और इनका खण्डन किया जा सकता है। कुछ अन्य हिस्सों में, वे अपने बाल पाठकों से, इस तरह के पाठ्यांशों के साथ सीधे बात करती हैं :

"बन्दरों को अच्छे से पता होता है कि मज़ा कैसे करते हैं! आपको अपने माँ और बाबा को सयाने बन्दरों के पास कुछ सीखने को भेजना चाहिए, जो अपने बच्चों को हर समय मौज़-मस्ती करने देते हैं।"

कुछ ख़ामियाँ

हालाँकि पुस्तक अत्यन्त पठनीय है, पर कुछ त्रुटियाँ हैं जिन्हें टाला जा सकता था। उदाहरण के लिए, 'रेट्स : रेट्स! हू इज़ देट', अध्याय में लेखिका ने बाँस में एक साथ फूल आने या *मौतम* की घटना को मिज़ोरम की बजाय ग़लती से नागालैंड का बताया है। एक अन्य हिस्से में, लेखिका जटिल मुद्दों पर अत्यधिक सरलीकृत परिप्रेक्ष्य देने की कोशिश करती हैं। यह उसी अध्याय में मिलता है, जहाँ वह 1960 में मिज़ोरम सशस्त्र आन्दोलन को बाँस में फूल के आने से जोड़ती हैं और इस जुड़ाव के जटिल सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक आयामों की उपेक्षा कर देती हैं। बेहतर होता, अगर लेखिका यह बतातीं कि पुष्पन ने कैसे चूहों को आकर्षित किया है जो खेतों की 90% से अधिक फ़सल चटकर गए थे और इसने न केवल 1960 में अकाल पैदा किया, बल्कि 2007-08 में फिर से वही हुआ।

'बटरफ्लाई : फ्लटरिंग फैरीस' के अध्याय में कोई सन्दर्भ दिए बिना बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी का उल्लेख किया गया है। एक अन्य जगह पर, लेखिका ने सुझाव दिया है कि पाठक अपने घरों में उल्लू का डिब्बा रखने के लिए निवेश करें। क्या यह वास्तव में उल्लू के लिए और उन लोगों के लिए सुरक्षित है जो उन्हें रखते हैं? ऐसे बक्से कहाँ से खरीदें या उल्लुओं को क्या-कैसे खिलाएँ जैसी व्यवहारिक समस्याओं के अलावा,

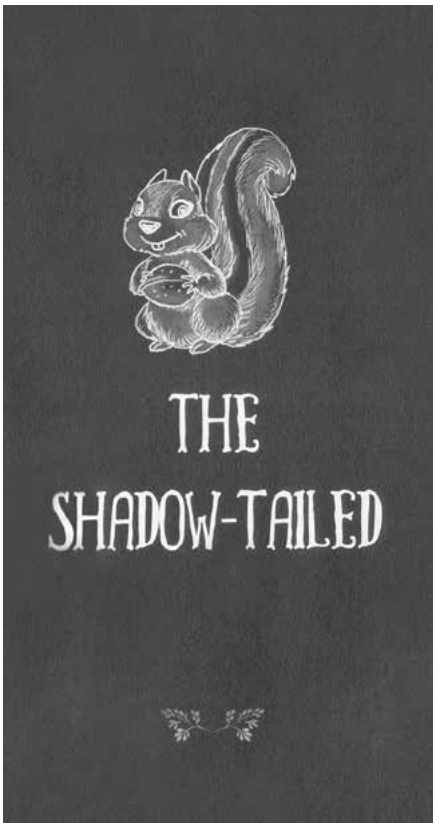

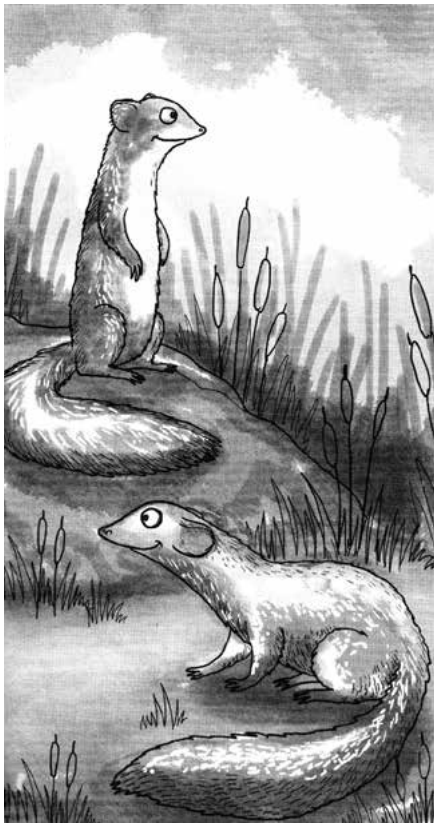

...पुस्तक से कुछ और चित्र

Credits: Photographed by Nimesh Ved.
License: CC-BY-NC.

क्या किसी पक्षी को क़ैद में रखना नैतिक या क़ानूनी रूप से सही है?

यह पुस्तक और अधिक दिलचस्प होती अगर इसमें अधिक भारतीय शब्द होते और उन मान्यताओं और प्रथाओं का वर्णन शामिल होता, जो स्थानीय समुदायों में अपने 'घर के पिछवाड़े में रह रहे जीवों' के बारे में पाई जाती हैं। सन्दर्भ खण्ड भी और समृद्ध हो सकता था!

समापन

इस पुस्तक का आनन्द लेने के कई कारण हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण तो लेखिका का लेखन और उनकी अन्तर्दृष्टि है। उदाहरण के लिए, लेखिका मनुष्यों को उनके सिंहासन से नज़ाकत से लेकिन सफलतापूर्वक नीचे उतारती हैं जहाँ हम अकसर स्वयं को वन्यजीवों के सन्दर्भ में रखते हैं : *"ऐसे कई जीव हैं जो हमारे शोर और बेढंगी आदतों के आदी हो गए हैं।"* इसके कुछ पृष्ठों बाद वे कहती हैं : *"अफ़सोस की बात है कि मनुष्य बन्दरों से ज़्यादा, बन्दरों जैसा व्यवहार करते हैं।"* एक अन्य उदाहरण में, लेखिका यह टिप्पणी करती हैं : *"कौन जाने, हम हर दिन अपने सूखे होंठों पर सूखे तिलचट्टे लगा रहे हों!"* इशारा इस ओर है कि कैसे हम अनजाने में कई जन्तु उत्पादों का उपभोग कर रहे हैं। इस तरह लेखिका बिना उपदेश दिए, हमें चेताने में सफल हो जाती हैं। इसके अलावा कई रमणीय सारगर्भित छोटे-छोटे वाक्य हैं, जैसे कि *'नेवला बेधड़क लेकिन शर्मीला होता है'* और *'तितलियाँ दिमाग़ वाली सुन्दरियाँ हैं'*। लेखिका न केवल ग़ैर-उबाऊ तरीक़े से सवाल करती हैं, बल्कि अकसर ऐसे शब्दों का उपयोग भी करती हैं जिनसे शायद युवा पीढ़ी जुड़ पाएगी। लेकिन, मेरे लिए, पुस्तक का मुख्य आकर्षण, कई पारिभाषिक शब्दों की सरल व्याख्याएँ हैं जिनसे हम अकसर रूबरू होते हैं, फिर भी उन्हें छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं भले ही हम

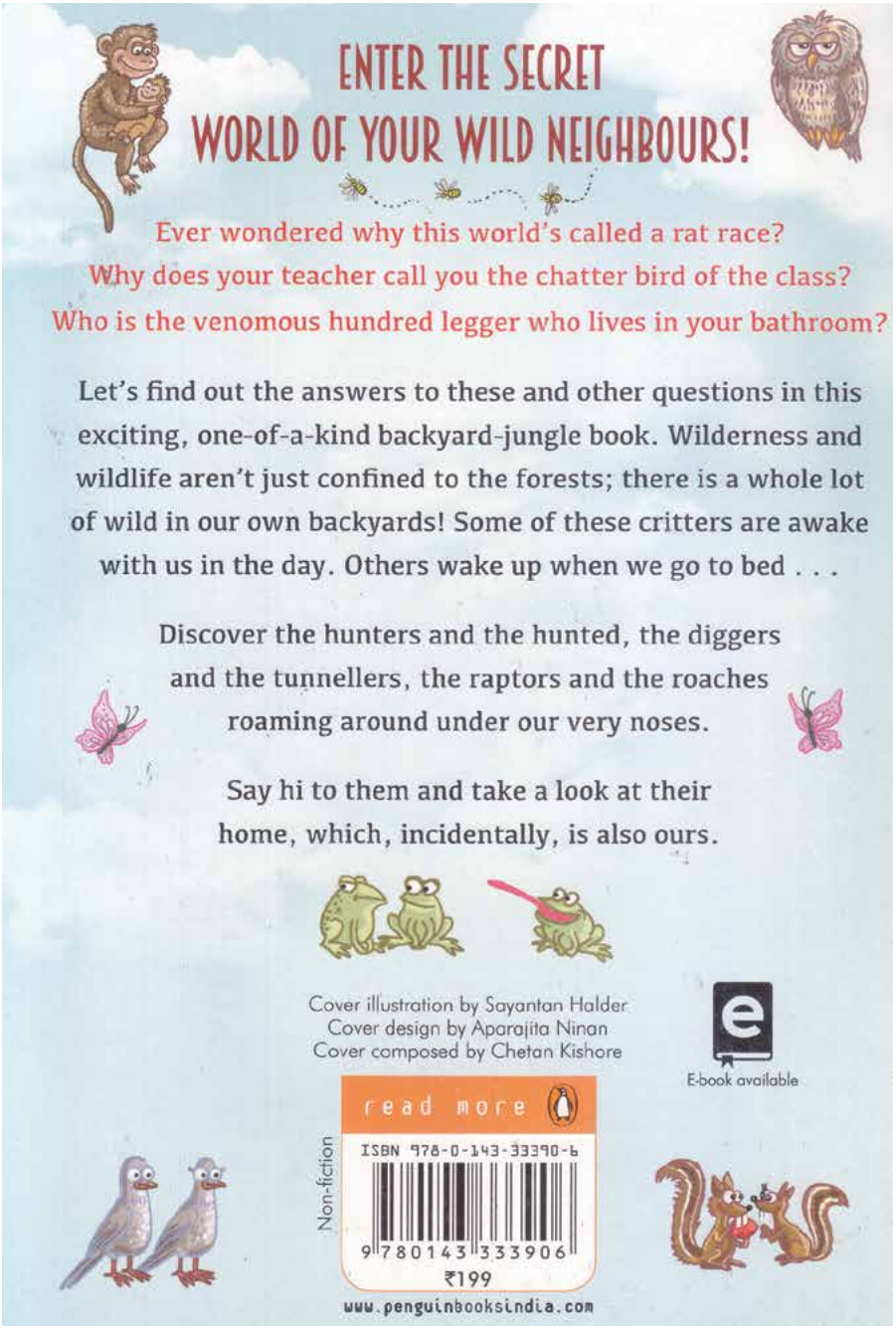

पुस्तक का पिछला कवर।

Credits: Photographed by Nimesh Ved. License: CC-BY-NC.

उनके अर्थ या महत्त्व को न समझे हों।

यह पुस्तक इनमें से कुछ पारिभाषिक शब्दों पर दुर्लभ सादगी के साथ बात करती है। उदाहरण के लिए, टिड्डियों और टिड्डीदल (locust और grasshopper) के बीच का अन्तर एक ही पंक्ति में प्रस्तुत कर दिया गया है : *"जब वे हज़ारों-लाखों का एक समूह बनाते हैं, तब हम उन्हें टिड्डीदल कहते हैं; और जब वे हमारे बाग़ानों और घास के मैदानों में अकेले रहते हैं, तो हम उन्हें टिड्डा कहते हैं।"*

निमेश वेद को साइकिल चलाने में मज़ा आता है। वे nimesh-ved.blogspot.com पर ब्लॉग लिखते हैं और उनसे nimesh.explore@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : प्रमोद मैथिल **पुनरीक्षण :** सुशील जोशी **कॉपी एडिटर** : अनुज उपाध्याय